भारतीय गैंडा सबसे बड़ा होता है

गैंडा एक जानवर है जिसकी पाँच जातियाँ पायी जाती हैं। इसमें से दो प्रजातियाँ अफ्रीका में तथा तीन दक्षिण एशिया में मिलती हैं। विकिपीडियाबालदार गैंडा गैंडे की एक विलुप्त जाति है जो प्लाइस्टोसीन युग में यूरोप और एशिया में फैली हुई थी। अपने पूरे शरीर पर घने बाल होने के कारण यह पूर्व हिमयुग के दौरान भी बची रही। एशियाई गैंडों में भारतीय गैंडा ही सबसे बड़ा और शानदार होता है। अब से कई सौ शताब्दी पूर्व योरपवासी भारतीय गैंडे से परिचित थे। गैंडा प्रकृति का वीर योद्धा है। उसकी विशेषता उसके नाक पर सींघ का होना है। नाक पर लम्बे.लम्बे और अति मोटे बाल एक लसदार पदार्थ से चिपक कर सींघ का रूप धारण कर लेते हैं। सींघ का नाक की हड्डी से कोई सम्बन्ध नहीं होता। शत्रु पर वह सींघ से वार करता है। राज्य की अमूल्य धरोहर है एक सींग वाला दुर्लभ भारतीय गैंडा। काजीरंगा के जंगल इस विशालकाय वन्य प्राणी की शरणस्थली हैं। यूं तो यहां कई प्रकार के अन्य जानवर तथा पक्षी रहते हैं। परंतु विश्व के पर्यटन मानचित्र पर काजीरंगा का नाम गैंडे के भारत के उत्तर.पूर्व राज्य असम में शिकारियों द्वारा एक सींग वाले गैंडों की हत्याओं में हालिया वृद्धि इस लुप्तप्राय जानवर के अस्तित्व को लेकर संघर्ष पर एक बार फिर रोशनी डालती है। एक समय मौजूदा पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त से लेकर नेपाल भूटान भारत और म्यांमार में पाया जाने वाला गैंडा आज केवल भारत के असम में 430 वर्ग किलोमीटर में फैले काजीरंगा नेशनल पार्क में ही सिमट कर रह गया है। यहाँ भी लगातार इनके शिकार किये जाते है।

वराह सुअर की एक प्रजाति है

जंगली सुअर या वाराह सुअर की एक प्रजाति है। यह मध्य यूरोप भूमध्य सागर क्षेत्र सहित एशिया में इंडोनेशिया तक के क्षेत्रों का मूल निवासी है। सुअर की एक प्रजाति है। यह मध्य यूरोप भूमध्य सागर क्षेत्र ;उत्तरी अफ्रीका एटलस पर्वत सहित एशिया में इंडोनेशिया तक के क्षेत्रों का मूल निवासी है। इन खुर वाले प्राणियों की खाल बहुत मोटी होती है और इनके शरीर जो थोड़े बहुत बाल रहते है। देशों में जंगली सूअर को श्वाइल्ड बोरश् भी कहा जाता है यह जंगली सूअरों में सबसे बड़ा होता है। यह पश्चिमी और उत्तरी यूरोपए उत्तरी अफ़्रीका भारत अंडमान द्वीप समूह और चीन में पाया जाता है। इसे अमेरिका और न्यूज़ीलैंड भी ले जाया गया।

विश्व का सबसे धीमा जानवर स्लॉथ

डिज्नी की एनिमेटिड फिल्म 'आइस एज' में 'सिड' नाम के स्लॉथ को बच्चों ने बहुत पसंद किया था लेकिन स्लॉथ उतने फुर्तीले नहीं होते जितना कि फिल्म में दिखाया गया था। वास्तव में दक्षिणी अमेरिका के जंगलों में पाया जाने वाला 'स्लॉथ' दुनिया का सबसे धीमा और सुस्त जानवर माना जाता है। स्लॉथ को आमतौर पर 'ऐंट ईटर' या चींटीखोर के नाम से भी जाना जाता है।

प्राय ऊंचे वृक्षों की ऊपरी टहनियों पर उल्टा लटका रहने वाला यह जानवर अपनी जिंदगी का अधिकांश समय इसी तरह पेड़ों पर उल्टे लटके रह कर ही गु-जार देता है और इस तरह उल्टे लटके रहने के कारण ही इसके बाल भी कलाई से कंधे की ओर उल्टे ही उगने शुरू हो जाते हैं।

हमारे लिए घंटों तक डाल पर लटके रहना बेहद मुश्किल होगा लेकिन स्लॉथ को इसमें कोई दिक्कत नहीं होती क्योंकि इसमें उनकी ऊर्जा खर्च ही नहीं होती है। स्लॉथ कितना सुस्त जानवर है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि यह २४ घंटों में से २१ घंटे तो सोकर ही गुजार देता है अर्थात २४ घंटे में से सिर्फ ३ घंटे ही जागता है और जागते समय भी

एक मील की दूरी तय करने में ६ से ७ घंटे तक का समय लेता है। वृक्षों की ऊपर वाली टहनियों पर स्लॉथ चूंकि दूर से देखने पर सूखे पत्तों के झुरमुट जैसा ही दिखाई पड़ता है, इसलिए इसे पहचानना थोड़ा मुश्किल होता है।

स्लॉथ मध्यम आकार के स्तनपायी जीव होते हैं। दरअसल पेड़ की डाल से लटकना शरीर की ऊर्जा बचाने का इनका एक अनूठा तरीका है। इन जानवरों के शरीर ने ऊर्जा बचाने के लिए खुद को इस तरह से ढाल लिया है।

वैसे कुछ जीव वैज्ञानिकों का मानना है कि स्लॉथ आलसी नहीं होते, इतना अवश्य है कि वे ज्यादातर एक ही जगह पर लटके रहते हैं और जब वे हिलते हैं तो उनकी गति इतनी धीमी होती है कि हम उस पर ध्यान ही नहीं दे पाते। स्लॉथ के चलने या हिलने का तरीका अन्य जानवरों के मुकाबले अलग नहीं होता बल्कि ये वैसे ही चलते हैं, जैसे बंदर या बिल्ली। फर्क सिर्फ इतना होता है कि ये धीरे-धीरे हिलते हैं।

जिस डाल पर वे लटके होते हैं अगर वह टूट भी रही हो तो भी वे फटाफट उसे छोड़ नहीं पाते। वे तेज हों या नहीं उनकी नाक बहुत तीखी होती है। न्याकातुरा बताते हैं कि उन्होंने कई बार अपने प्रयोगों में यह पाया कि वे पहले सूंघकर सुनिश्चित करते हैं कि उस डाल पर चढ़ा जा सकता है या नहीं और जब उन्हें पूरा यकीन हो जाता है कि उसके बाद ही वे डाल पर चढ़ते हैं।

स्लॉथ अधिकांशत: पत्ते और कीड़े ही खाते हैं। पेड़ों पर लटके रहने के कारण इन्हें खाने की तलाश में कहीं जाना भी नहीं पड़ता। पत्ते और कीड़े दोनों ही इन्हें हमेशा आंखों के सामने ही दिख रहे होते हैं बस जीभ निकाली और खाना निगल लिया।स्लॉथ पर शोध करने वाले कुछ वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि स्लॉथ ने यह सुस्त जीवनशैली इसलिए अपना रखी है ताकि यह शिकारी जानवरों से बचा रह सके।

क्या हाथी के सर पर बाल आते है ठंडक पहुंचाने के लिए

हाथी के सर पर जो बाल होते हैं वह ठंडक पहुचाने के लिए होते हैं । यह बात एक शोध में समाने आई है। हाथियों के सिर पर बाल क्यों होते हैं । इस सवाल के जवाब में प्रिंसटन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के एक दल का कहना है कि शरीर को ठंडा रखने के लिये ऐसा होता है । अनुसंधान दल के अगुआ प्रोफेसर एली बोउ जैद ने कहा कि कि अन्य जानवरों के शरीर पर बाल होते हैं ताकि वे ठंड के मौसम में गर्म रहें लेकिन हाथियों के मामले में यह अलग है । हाथी चूंकि गर्म वातावरण में रहते हैं इसलिये उनकी त्वचा से गर्मी बाहर निकलकर हवा में में जाती है । जैद के अनुसार जब शरीर पर होते हैं तो यह एक इंसुलेटर की तरह काम करते हैं । अध्ययन में हमने देखा कि कम बाल होने से इससे विपरीत असर होता है । हमें इस बात ने आश्चर्यचकित किया कि बाल सकारात्मक प्रभाव डालते हैं । रिपोर्ट के अनुसार धरती पर किसी भी आधुनिक जानवर की तुलना में हाथी का आकार विशाल होता है और उन्हें अन्य की तुलना में गर्मी दूर करने की सबसे अधिक जरूरत होती है । हाथी इसके लिये कई विचित्र क्रियायें भी करते हैं । मसलन कानों को फड़फड़ाना धूल में लेटना तथा पानी की बौछार सूढ़ से डालना । जैद ने कहा कि चूंकि प्रौढ़ हाथियों को प्रतिदिन कई किलोवाट गर्मी बाहर करने की जरूरत होती है इसलिये उन्होंने हाथी के सिर अथवा पीठ पर उगे बालों पर ध्यान दिया और उन्हें यह चकित करने वाला प्रभाव नजर आया ।ध्ययन दल ने पाया कि हाथी के बाल उसे २३ प्रतिशत तक गर्मी कम करने में मददगार होते हैं । हाथियों में प्रति वर्ग मीटर बालों का घनत्व अधिक से अधिक १५०० बालों का होता है

दुनिया के अजब निराले वृक्ष

संसार में वृक्ष व वनस्पतियों का अपना महत्व है। चारा, ईंधन एवं अन्य कितने ही प्रकार के छोटे-बड़े उपयोगों में ये जन्तु और मनुष्य के बराबर काम आते हैं। दुनिया भर के पेड़ों पर दृष्टिपात करें तो उनमें एक से एक विलक्षण प्रकृति वाले मिलेंगे। वृक्षों की अद्भुतता के विषय में यहां जानकारियां प्रस्तुत हैं।

आमेजन घाटी के जंगलों में एक पेड़ ऐसा पाया जाता है जो दूध के समान पौष्टिक पेय प्रदान करता है। इन पेड़ों को 'काउट्री' कहा जाता है। पेड़ों पर बड़ा-सा चीरा लगाकर इस पौष्टिक पदार्थ को पाया जाता है। इस पेय पदार्थ से चाय, काफी, दही सब कुछ बनता है। वैज्ञानिकों के अनुसार यह तरल पदार्थ कई प्रकार के पोषक तत्वों से संव्याप्त हैं किंतु वहां के स्थानीय लोग इसे खाने के काम में प्रयुक्त न करके गोंद बना लेते हैं।

मैक्सिको में उगने वाले कुछ ऐसे वृक्ष हैं जो विस्फोट करते हैं। इन वृक्षों में बेल की शक्ल में फल लगते हैं। फल का ऊपरी भाग काफी कठोर होता है। जब वे पूरी तरह पक जाते हैं तो तीक्ष्ण आवाज के साथ फट पड़ते है। इस दौरान यदि वृक्ष से दस-पन्द्रह फुट की परिधि कोई आदमी अथवा जानवर होता है तो उसके घायल होने की संभावना बनी रहती है। उस फल में एक विषैली गैस भी होती है जो आस-पास के वातावरण में फैल जाती है। यह गैस स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक होती है।

आग और पेड़ का संबंध जहर और जन्तु की तरह होता है। जहर से जन्तु मरते हैं और आग से वृक्षों को हानि होती है। जापान में पेड़ों की कुछ ऐसी ही किस्में हैं जो आग का आभास पैदा करती हैं। शाम होते ही उनकी शीर्षस्थ टहनियों से धुआं निकलने जैसा दृश्य पैदा हो जाता है। इतने पर भी वे हरे-भरे बने रहते हैं। कोई अजनबी इस दृश्य को देखकर यही कहेगा कि पेड़ों में आग लग गई है किंतु वह आग नहीं होती। धुआं जैसा दिखने वाला पदार्थ जलवाष्प होता है। यह वाष्प इतना सघन होता है कि सामने वाले को धुएं का भ्रम पैदा हो जाता है।

मध्य अमरीका के जंगलों में एक ऐसा पादप है जो 'कैंडल ट्री' के नाम से जाना जाता है। इस पेड़ में 3-4 फुट लम्बी फलियां लगती हैं। इनमें बड़े परिमाण में तेल पाया जाता है। इसी कारण यहां के निवासी अपनी प्रकाश संबंधी जरूरत की पूर्ति इससे करते हैं। फलियों में मोम की भांति धागा पिरो कर उसे जलाते हैं और घर को प्रकाशित करते हैं। वृक्ष से यदि बूंदाबादी होने लगे तो उसे क्या कहा जाए? जो भी कहें पर यह सत्य है कि ब्रिटिश कोलम्बिया में ऐसे वृक्ष अधिक पाये जाते हैं जिनकी पत्तियों से लगातार जल की बूंदें टपकती रहती हैं। इतना जल इनमें कहां से आता है? इस संबंध में वनस्पति शास्त्रियों का कहना है कि बरसात के दिनों में ये इतना पानी अवशोषित कर लेते हैं कि वह बूंद बूंद करके अगली बरसात तक गिरता रहता है। स्थानीय निवासी इसका प्रयोग पेयजल के रूप में करते हैं।

साबुन अगर पेड़ में फलने लगें तो इसे आश्चर्यजनक ही कहा जाएगा। उत्तरी अफ्रीका के जंगलों में ऐसा पेड़ पाया जाता है। इसमें अखरोट की शक्ल में बड़े-बड़े फल लगते हैं। जब ये पकते हैं तो पेड़ से गिर पड़ते है। इन फलों को यदि पानी में डाला जाए

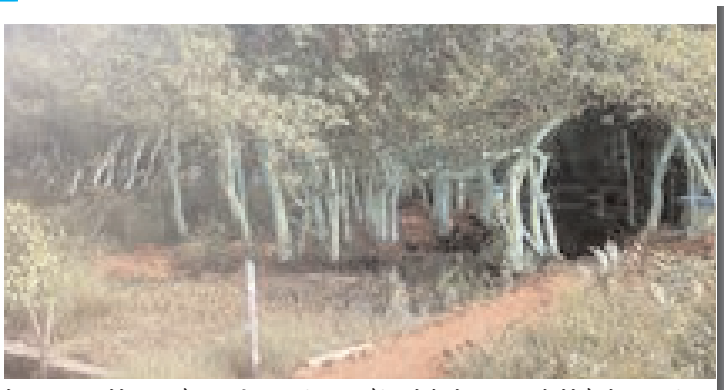

तो झाग उत्पन्न होने लगता है, वह भी इतना, जितना असाधारण और उच्च किस्म के साबुनों से निकलता है। आदिवासी कबीले के बंजारे इसे वस्त्र धोने और नहाने के काम में लाते है।

कुछ ऐसे वृक्ष होते हैं जो संगीत की स्वरलहरियां पैदा

करते है। अफ्रीकी देश बारबड़ोस की घाटियां ऐसे ही पेड़ों से भरी पड़ी हैं। इनकी पत्तियां और फलियां अजीबोगरीब ढंग से कटी-फटी होती हैं। इनके मध्य से जब हवा गुजरती है तो उसकी तीव्रता के हिसाब से उससे विभिन्न प्रकार से संगीत स्वर उभरते हैं। रात के सन्नाटे में जब ये स्वरलहरियां निकलती हैं और रह-रहकर परिवर्तित होती हैं तो बड़ा ही डरावना प्रतीत होता है।

'बैड वुमन' नाम से जाने, जाने वाले पादप मैक्सिको के मोरलॉस राज्य में होते हैं। ये ऊसर भूमि पर ही उगते हैं। पल्लव विहीन इनकी शाखाएं परस्पर बुरी तरह आलिंग्नबद्ध होती हैं और ऊपर की ओर उठी होती हैं। इनकी डालों और तने में एक विषैला रस होता है। अगर इसे किसी मनुष्य या जन्तु पर डाल दिया जाए तो असह्य खुजली और तेज बुखार के साथ कुछ दिनों में ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

इन विचित्रताओं को वनस्पति जगत का परोक्ष अनुदान ही कहना पड़ेगा। उसके प्रत्यक्ष उपहारों में ऐसी और इतनी वस्तुएं सम्मिलित हैं जिनके अभाव में शायद जीवन ही कठिन हो जाए। प्रकृति की जादूगिरी के सामने इन्सान का ज्ञान भी नतमस्तक है।